

“मीठे बच्चे - अपने को सुधारने के लिए अटेन्शन दो, दैवीगुण धारण करो, बाप कभी किसी पर नाराज़ नहीं होते, शिक्षा देते हैं, इसमें डरने की बात नहीं”

**प्रश्न:-** बच्चों को कौन-सी एक स्मृति रहे तो टाइम वेस्ट न करें?

**उत्तर:-** यह संगम का समय है, बहुत ऊंची लॉटरी मिली है। बाप हमें हीरे जैसा देवता बना रहे हैं। यह स्मृति रहे तो कभी भी टाइम वेस्ट न करें। यह नॉलेज सोर्स ऑफ इनकम है इसलिए पढ़ाई कभी मिस न हो। माया देह-अभिमान में लाने की कोशिश करेगी। लेकिन तुम्हारा डायरेक्ट बाप से योग हो तो समय सफल हो जायेगा।

**ओम् शान्ति।** बच्चों को यह तो मालूम है कि यह बाप है, इसमें डरने की कोई बात नहीं। यह कोई साधू, महात्मा नहीं है जो कोई बद-दुआ करेंगे या गुस्सा करेंगे। उन गुरुओं आदि में तो बहुत क्रोध होता है, तो उनसे मनुष्य डरते हैं, कहाँ श्राप न दे देवें। यहाँ तो ऐसी कोई बात नहीं। बच्चों को कभी डरने की बात नहीं। बाप से डरते वह हैं जो खुद चंचल होते हैं। वह लौकिक बाप तो गुस्सा भी करते हैं। यहाँ तो बाप कभी गुस्सा आदि नहीं करते हैं। समझाते हैं, अगर बाप को याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। अपना ही जन्म-जन्मान्तर के लिए नुकसान करेंगे। बाप तो समझानी देते हैं, आगे के लिए सुधर जाएं। बाकी ऐसे नहीं कि बाप नाराज़ होते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं, बच्चे अपने को सुधारने के लिए याद की यात्रा पर अटेन्शन दो। साथ-साथ चक्र को बुद्धि में रखो, दैवीगुण धारण करो। याद है मुख्य। बाकी सृष्टि चक्र की नॉलेज तो बहुत सिम्पल है। वह है सोर्स ऑफ इनकम। परन्तु उनके साथ दैवीगुण भी धारण करने हैं। इस समय हैं बिल्कुल आसुरी गुण। छोटे बच्चों में भी आसुरी गुण होते हैं लेकिन उन्होंने को मारना बिल्कुल नहीं है और ही सीखते हैं। वहाँ सतयुग में तो सीखना नहीं होता है। यहाँ तो माँ-बाप से बच्चे सब सीखते हैं। बाबा गरीबों की बात करते हैं। साहूकारों के लिए तो यहाँ जैसे स्वर्ग है। उनको ज्ञान की दरकार नहीं। यह तो पढ़ाई है। टीचर चाहिए, जो सिखावे, सुधारे। तो बाप गरीबों की बात करते हैं। कैसी हालत है। कैसे-कैसे बच्चे खराब होते हैं। माँ-बाप को सब देखते रहते हैं। फिर छोटेपन में ही सब खराब हो जाते हैं। यह रूहानी बाप कहते हैं मैं भी गरीब निवाज़ हूँ। समझाता हूँ देखो इस दुनिया में मनुष्यों की क्या हालत है। तमोप्रधान दुनिया है। तमोप्रधान की भी कोई हद होती है ना। 1250 वर्ष तो कलियुग को हुए। एक दिन भी कम जास्ती नहीं। जब पूरी तमोप्रधान हुई तब बाप को आना पड़ा। बाप कहते हैं मैं ड्रामा अनुसार बंधायमान हूँ। मुझे आना ही पड़ता है, शुरू में कितने गरीब आये। साहूकार

भी आये, दोनों इकट्ठे बैठते थे। बड़े-बड़े घर की बच्चियां भागी, कुछ भी ले नहीं आई। कितना हंगामा हो गया। ड्रामा में जो होने का था, वह हो गया। ख्याल भी नहीं था, ऐसे होगा। बाबा खुद वन्दर खाता था, क्या हो रहा है। इन्हों की हिस्ट्री बड़ी वन्दरफुल है। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाबा ने सबको कह दिया चिट्ठी लिखाकर ले आओ—हम ज्ञान अमृत पीने जाते हैं। फिर उन्हीं के पति लोग विलायत से आ गये। वह बोले विष दो, यह कहें हमने ज्ञान अमृत पिया है, विष कैसे दे सकते। इस पर इन्हों का एक गीत भी है। इसको कहते हैं चरित्र। शास्त्रों में फिर कृष्ण के चरित्र लिख दिये हैं। कृष्ण की तो बात हो न सके। तो यह सब ड्रामा में नूँध है। नाटक में यह सब होता है। हँसीकुड़ी आदि आदि.... यह तो दोनों बाप कहते हैं हमने कुछ भी नहीं किया। यह तो ड्रामा का खेल चल रहा है। छोटे-छोटे बच्चे आ गये। अभी वह कितने बड़े-बड़े हो गये हैं। बच्चों के कितने वन्दरफुल नाम सन्देश पुत्रियाँ ले आई, फिर जो उनसे भाग गये, उनका वह नाम तो है ही नहीं, फिर पुराना नाम शुरू हो गया। इसलिए ब्राह्मणों की माला होती नहीं।

तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। पहले माला फेरते थे। अभी तुम माला के दाने बनते हो। वहाँ भक्ति होती नहीं, यह नॉलेज है समझने की, है भी सेकण्ड की नॉलेज। फिर उनको कहते हैं ज्ञान का सागर, सारा सागर स्याही बनाओ, जंगल कलम बनाओ तो भी पूरा हो न सके और फिर है भी सेकण्ड की बात। अल्फ को जान गये हो तो बे बादशाही जरूर मिलनी चाहिए। तो वह अवस्था जमाने में अर्थात् पतित से पावन होने में मेहनत है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ अपने बेहद के बाप को याद करो। इसमें है मेहनत। तदबीर कराने वाला टीचर तो है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो टीचर भी क्या करे। टीचर तो पढ़ायेंगे। ऐसे तो नहीं, रिश्त लेकर पास कर देंगे! यह तो बच्चे समझते हैं यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। ढेर बच्चियों की चिट्ठियाँ आती हैं बापदादा के नाम पर। शिवबाबा केयरआफ प्रजापिता ब्रह्मा। बाप से वर्सा लेते हो, इस दादा द्वारा। त्रिमूर्ति में है—ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। ब्रह्मा को क्रियेटर नहीं कहेंगे। बेहद का क्रियेटर तो वह बाप ही है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बेहद का हो गया। प्रजापिता ब्रह्मा है तो बहुत प्रजा हो जायेगी। सब कहते हैं ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर, शिवबाबा को ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर नहीं कहेंगे। वह तो सभी आत्माओं का बाप हो गया। आत्मायें सभी भाई-भाई हैं। फिर बहन-भाई होते हैं। बेहद के सिजरे का हेड प्रजापिता ब्रह्मा हो गया। जैसे बिरादरी का सिजरा होता है ना। यह है बेहद का सिजरा। आदम और बीबी, एडम और ईव किसको कहते हैं? ब्रह्मा-सरस्वती को कहेंगे। अब सिजरा तो बहुत बड़ा हो गया है। सारा झाड़ जड़जड़ीभूत

हो गया है। फिर नया चाहिए। इसको कहा जाता है वैराइटी धर्मों का झाड़। वैराइटी फीचर्स हैं, एक न मिले दूसरे से। हर एक की एक्टिविटी का पार्ट एक न मिले दूसरे से। यह बहुत गुह्य बातें हैं। छोटी बुद्धि वाले तो समझ न सके। बहुत मुश्किल है। हम आत्मा छोटी बिन्दी हैं। परमपिता परमात्मा भी छोटी बिन्दी है, यहाँ बाजू में आकर बैठते हैं। आत्मा कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है। बापदादा दोनों का इकट्ठा पार्ट बड़ा वन्दरफुल है। बाबा ने यह रथ बड़ा अनुभवी लिया है। बाबा खुद समझाते हैं यह भाग्यशाली रथ है। इस मकान अथवा रथ में आत्मा बैठी है। हम ऐसे बाप को किराये पर अपना मकान वा रथ देवें तो क्या समझते हो! इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है, जिसमें बाप बैठ तुम बच्चों को हीरे जैसा देवता बनाते हैं। आगे थोड़ेही समझते थे। बिल्कुल तुच्छ बुद्धि थे।

अभी तुम बच्चे समझते हो तो फिर अच्छी रीति पुरुषार्थ भी करना चाहिए, टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। स्कूल में टाइम वेस्ट करने से नापास हो जायेंगे। बाप तुमको बहुत बड़ी लॉटरी देते हैं। कोई राजा के घर जन्म लेते हैं तो जैसेकि लॉटरी मिली ना। कंगाल हैं तो उनको लॉटरी थोड़ेही कहेंगे। यह है सबसे ऊंची लॉटरी, इसमें टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। बाबा जानते हैं माया की बॉक्सिंग है। घड़ी-घड़ी माया देह-अभिमान में लाती है। तुम्हारा बाप के साथ डायरेक्ट योग है। सम्मुख बैठे हैं ना। इसलिए यहाँ रिफ्रेश होने आते हो ड्रामा अनुसार। बाप कहते हैं मैं तुमको जो समझाता हूँ वह धारण करना है। यह ज्ञान भी तुमको अभी मिलता है। फिर प्रायः लोप हो जाता है। ढेर आत्मायें चली जाती हैं शान्तिधाम। फिर आधाकल्प के बाद भक्ति मार्ग शुरू होता है। आधाकल्प से तुम वेद-शास्त्र पढ़ते आये, भक्ति करते आये हो। अब मूल बात समझाई जाती है कि तुम बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के विकर्म विनाश हों। यह नॉलेज है सोर्स ऑफ इनकम, इससे तुम पद्मापद्म भाग्यशाली बनते हो। स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ तो सब सुख हैं। बाप याद दिलाते हैं तुमको स्वर्ग में कितने अपार सुख दिये हैं। तुम विश्व के मालिक थे फिर सब गंवा दिया। तुम रावण के गुलाम बन गये हो। राम और रावण का कितना यह वन्दरफुल खेल है। यह फिर भी होगा। अनादि बना-बनाया खेल है। स्वर्ग में तुम एवरहेल्दी-वेल्दी रहते हो। यहाँ मनुष्य को हेल्दी बनाने के लिए कितना खर्चा करते हैं वह भी एक जन्म के लिए। तुमको आधाकल्प एवरहेल्दी बनाने में क्या खर्च होता है! एक नया पैसा भी नहीं। देवतायें एवरहेल्दी हैं ना। तुम यहाँ आये ही हो एवरहेल्दी बनने के लिए। एक बाप के बिगर सर्व को एवरहेल्दी और कोई बना न सके। तुम अभी सर्वगुण सम्पन्न बन रहे हो। अभी तुम संगम पर हो। बाप तुमको नई दुनिया का मालिक बना रहे हैं।

ड्रामा प्लैन अनुसार जब तक ब्राह्मण न बनें तब तक देवता बन न सकें। जब तक पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप से पुरुषोत्तम बनने न आयें तो देवता बन न सकें।

अच्छा, आज बाबा ने रूहानी ड्रिल भी सिखाई, नॉलेज भी सुनाई, बच्चों को सावधान भी किया। गफलत नहीं करो, उल्टा-सुल्टा बोलो भी नहीं। शान्ति में रहो और बाप को याद करो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्तै।

**धारणा के लिए मुख्य सार:-**

१. विकर्म विनाश कर स्वयं को सुधारने के लिए याद की यात्रा पर पूरा अटेन्शन देना है।  
दैवीगुण धारण करने हैं।
२. देवता बनने के लिए संगमयुग पर पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करना है, गफलत में अपना टाइम वेस्ट नहीं करना है।

**वरदान:- साक्षी स्थिति में स्थित हो परिस्थितियों के खेल को देखने वाले सन्तोषी आत्मा भव**

कैसी भी हिलाने वाली परिस्थिति हो लेकिन साक्षी स्थिति में स्थित हो जाओ तो अनुभव करेंगे जैसे पपेट शो (कठपुतली का खेल) है। रीयल नहीं है। अपनी शान में रहते हुए खेल को देखो। संगमयुग का श्रेष्ठ शान है सन्तुष्टमणी बनना वा सन्तोषी होकर रहना। इस शान में रहने वाली आत्मा परेशान नहीं हो सकती। संगमयुग पर बापदादा की विशेष देन सन्तुष्टता है।

**स्लोगन:-**

ऐसे खुशनुमः बनो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई दे।